REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2018

कौटिलीय अर्थशास्त्र में कृषि संदर्भ में चिकित्सक अभ्यास

डॉ. अशोक माने
इतिहास विभाग प्रमुख, श्री संत दामाजी महाविद्यालय, मंगळवेढा.

प्रस्तावना

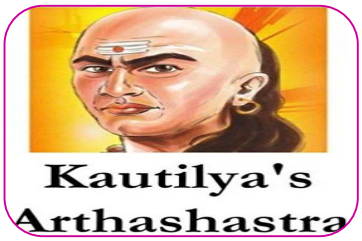

प्राचीन भारत के इतिहास संबंधी जो जानकारी देनेवाली इकाईयाँ है उस में कौटिल्य का अर्थशास्त्र यह ग्रंथ एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है। चौथी शताब्दी में कौटिल्य उर्फ विष्णु गुप्ता ने इस किताब को लिखा था। कौटिल्य यह गुप्त चंद्र मौर्य के मंत्री थे, माना जाता है कि चंद्रगुप्त मौर्य ने मगद साम्राज्य पर सत्ता स्थापित करने में मदद की थी। इस पुस्तक में, नंद और मौर्य राजनीति, सामाजिक व्यवस्था, न्यायिक और राष्ट्रीय संबंध आदि के बारे में जानकारी सूचित की गई है। इस पुस्तक में ६ हजार संस्कृत अध्याय हैं, और इसकी विभाजन १५ प्लस और १८० मामलों में विभाजित है। इस पुस्तक में, सूत्रों और टिप्पणीयों का संयोजन है और यह दोनों मुखर और कविता के रूप में है।

अनुसंधान पध्दती

इस अनुसंधान के अवधारणा और लाभों को उजागर करने के लिए कुछ प्राथमिक और माध्यमिक संदर्भ उपकरणों की कोशिश की गई है।

विषय विवेचन:

खेती भूमि का स्वामित्व

यद्यपि भूमिपर राजा का स्वामित्व होता है, इसे सैद्धांतिक रूप से स्वीकार कर लिया गया है, हालांकि, भूमि के निजी स्वामित्व को स्वीकार कर लिया गया है। कृषि को भूमि देने के बारे में बताते हुए, वह कहते हैं कि जो लोग भूमि देने को तैयार हैं, उनके अधिकार के समय तक जमीन दी जानी चाहिए।

१) वैश्य समुदाय द्वारा खेती की जानी चाहिए

यद्यपि इस तरह के अभ्यास योग्य परिवारों के लोगों को दिया गया था, हालांकि गांव जसुद आदि के स्थानीय निवासियों को इस जमीन की अनुमति दी गई थी। लेकिन उनके पास भूमि को प्रतिज्ञा करने या बेचने का अधिकार नही था। कुछ जगहों पर, सामुदायिक खेती की गई थी।

२) खेत क्षेत्र में किसानों और शूद्रों की संख्या अधिक होने के कारण प्रत्यक्ष रुप से खेती का काम यही वर्ग किया करता होगा। कृषि में बाधाओं से बचने के लिए, नाटय और संबंधित कलाकारों को गांवों से दूर रखा गया था।

खेती भूमी की प्रतवारी:

कृषि, खेती, भूमि और आवास के लिए बागाईत भूमी के बारे में उन्होंने कहा कि यह भूमि कृषि के लिए उपयुक्त है। ऐसा लगता है कि मवेशियों के भोजन के लिए बर्बाद भूमि का उपयोग किया जाना चाहिए, यह सुझाव देकर अंतरात्मा और कृषि भूमि में स्थिरता थी।

फसलें:

क्षेत्र में उपलब्ध पानी के अनुसार यह मानना उचित है कि किस प्रकार की फसल सर्दियों या गर्मियों के मौसम में होनी चाहिए। उनके अनुसार, चावल, तिल के बीज, जौ आदि जैसी फसलें सीजन के दौरान, मानसून के मौसम में और दाल, जौ, गेहूं, सरसों आदि जैसे

फसलों का उत्पादन किया जाना चाहिए। मानसून के अंत में काटा जाना चाहिए इसके अलावा, सब्जियां, फलों, पशुपालन, औषधीय पौधों आदि की खेती पर जोर दिया जाता है। नकदी फसलों के साथ, यह आवश्यक फसलों के उत्पादन और औषधीय वनस्पतीयों के पौधों के उत्पादन के लिए भी उल्लेखनीय है।

बीज, उर्वरक और बुवाई:

तथ्य यह है कि इस के संबंध में अनाज की बुवाई की जानी चाहिए। अनाज के बीज को सुरक्षित रखने के लिए उपाय हैं। गोबर और मछली के लाभों को बताते हुए, खाद और मछली को उर्वरक के रूप में उपयोग करना महत्वपूर्ण है, जब उर्वरक और मछली खराब हो जाते हैं। सरकारी भूमि में, दासों और मजदूरों द्वारा बुवाई की जाती थी, जबकि कुछ सरकारी जमीन निजी आयतों को दी गई थी- जो आधे सस्ते की आय के लिए बोली थी।

जल आपूर्ति प्रणाली:

वर्षा जल आपूर्ति पर निर्भर पानी की मात्रा को कम करने के लिए, सरकार ने इसे बंधन बनाने, तालाब खोदने और पुल का काम करने के लिए आवश्यक समझा। यह सुझाव दिया जाता है कि सरकार को निजी लोगों को तालाबों को खोदने और बांधों का निर्माण करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। उदाहरण नए तालाब, अच्छी तरह से निर्मिती करने वालों को पांच साल तक कर से छूट दी जाएगी। आधुनिक समय में, सरकार कृषि की आय बढ़ाने की कोशिश कर रही है।

भूमि राजस्व:

किसी भी देश के राजस्व से अर्जित आय विशेष महत्व है यह तुरंत सुझाव दिया है किसानों की कुल आय के १/६ का राजस्व एकत्र किया जाता है। लेकिन सूखे या अन्य आपदाओं के दौरान कृषि के नुकसान के मामले में, भूमि राजस्व को छूट दी गई थी। कौटिल्य द्वारा सुझाए गए भूमि राजस्व का अनुपात सामान्य जनता के लिए सस्ती था इसलिए, राज्य का उत्पाद स्थायी नश्वर है वर्तमान में, यदि जमीन के किसानों की उत्पादन क्षमता, खेती की लागत इत्यादि जैसे कारकों पर विचार किया जाता है तो सरकार भूमि की आय बढ़ाने में मदद करेगी।

कृषि अपराध और दंडः (शिक्षा)

कौटिल्य के अनुसार, खेती एक असली संपत्ति है और अगर इसके बारे में झगड़ा है, तो यह बुजुर्गों की राय और निर्णय ध्यान में रखा जाना चाहिए। प्रजा संरक्षण हेतू कौटिल्य ने कुछ दंड निर्धारित किए है। उदाहरण के लिए माना जाता है कि पानी बटवारें में नियंत्रण, बुवाई के मौसम के दौरान बुवाई, पशु, आदि से फसलों की हानि, लोगों की दिलचस्पी के साथ-साथ आय और सरकार की गिरावट को बढ़ाने के लिए माना जाता है।

खाद्य सुरक्षा और आपदा प्रबंधन:

भोजन सुरक्षा को तैयार करने के लिए प्रयास किया गया है। उदाहरण के लिए अनाज के पास आग नहश होनी चाहिए यह लगभग पानी होना चाहिए गोदामों में ऊंची दीवारों और छत को पर्याप्त रखा जाना चाहिए।

राज्य सत्ता लोगों पर शासन करनेवाली और समृद्धि के लिए एक चिंता करनेवाली संस्था है। कौटिल्य का ऐसा मानना था की सूखे और अन्य आपदाओं के दौरान, राजा को किसानों को आर्थिक रुप में मदद के रुप में धान्य और बुवाईं के लिये बिज देना चाहिए। सूखा संचालन हटाया जाना चाहिए आग्रह है कि किसान को कुटीर के लिए प्रबंधन किया जाना चाहिए।

कृषि अधिकारी के कर्तव्य

कृषि कार्य के लिए प्रशासन में एक स्वतंत्र अधिकारी था। और वह अर्थशास्त्र में सीताध्यक्ष के रूप में रहे हैं। सभी प्रकारों के बिजों को इकठ्ठा करना, सरकार की खेती में मजदूरों की सहायतासे बुवाई करना, खेती के लिए खेती इकाई कम न हो इस बात की महत्वपूर्ण् जानकारी कौटिल्य ने अपने ग्रंथ में दि है।

राजा के कर्तव्य:

कृषि के विकास और कृषि के प्रोत्साहन के लिए किसानों को प्रोत्साहित करना यह महत्वपूर्ण कार्य माना जाता था, मौर्य काल के दौरान भी, आधुनिक समय की तरह कौटिल्य की राय है कि किसानों को अनाज, पशु और धन को खाद्य अनाज के रूप में ले जाना चाहिए और फसल के बाद उनसे वसूली करनी चाहिए। यह आवश्यक था कि कौंटिल्य उन किसानों को वित्तीय सहायता मुहैया कराएं जिनको लगान देना है। आवश्यक सुविधाओं की कमी और गांव मजदूरों की कमी न हो यह बात कौटिल्य ने महत्वपूर्ण मानी थी।

वर्तमान में, भारत में कर्ज बोझ के कारण किसानों की आत्महत्याओं के उदाहरणों पर विचार होने पर समझ में आता है की कौटिल्य का अर्थशास्त्र यह ग्रंथ कितना महत्वपूर्ण होगा।

निष्कर्ष:

लोगों के अधिकारों को ध्यान में रखने के लक्ष्य के कारण, कृषि के विभिन्न नियोजन और विकास पहलुओं की चर्चा हुई है। उन्होंने मुख्य रूप से जल आपूर्ति व्यवस्था, किसानों के हितों, आपातकालीन योजना आदि पर चर्चा की है। आज, भारत की कृषि भूमि में, प्रस्तावित कृषि प्रावधानों और उपचारों के बारे में फिर से सोचने की आवश्यकता है। अपने विभिन्न विचारों, इसकी विशिष्टता और श्रेष्ठता के साथ आधुनिक समय में विकसित कृषिविद नियोजन और विकास की अवधारणा की तुलना। यह अपने कृषि ज्ञान की गहराई को भी समझता है। आधुनिक कृषि नीति तय करते समय अर्थशास्त्र का एक नया अध्ययन आवश्यक है। चौथे शताब्दी में भारतीय विचारकों के इन विचारों के कारण आधुनिक समय में बहुत महत्वपूर्ण हैं।

संदर्भ ग्रंथ

१. स्मिथ, व्ही. ए., द ऑक्सफर्ड हिस्ट्री ऑफ इंडिया, ऑक्सफर्ड युनिव्हर्सिटी प्रेस, लंडन, १९५४-पृ.९५.
२. मराठी विश्वकोष, खंड पहिला, पृ. २३४
३. भावे, ह.भ. कौटिल्य अर्थशास्त्र, वरदा बुक्स, पुणे, १९८९, पृ.२१.
४. कंगले, र.प्र., कौटिलीय अर्थशास्त्रम् (भाषांतर) म.रा.सा.व.संस्कृती मंडल, १९८२, पृ.१६९.